www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म्

# आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 25 रोहतक, 7 दिसम्बर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

# क्या ईश्वर हमसे रूठ गए हैं?

❑ रमेश चन्द्र पाहूजा

हम सभी भलीभांति जानते हैं कि सृष्टि के आदिकाल से ही उस दयालु ईश्वर ने चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के माध्यम से क्रमशः हमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान प्रदान किया। इन वेदों में परा और अपरा दोनों विद्याओं का ज्ञान-बीच रूप में उपलब्ध है। वेदों का एक-एक मन्त्र बहुमूल्य हीरे मोतियों से जड़ा हुआ है, अपने आप में वरदान है, कई रहस्यों से परिपूर्ण है। महर्षि पतञ्जलि जी का कथन है कि वेदमन्त्र का तो कहना ही क्या, उसका एक-एक शब्द ही बहुमूल्य है—

**'एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गलोके कामधुक् भवति।'**

यदि हमें एक शब्द का भी भलीभांति, यथासंगत ज्ञान हो जाये और हम उसे अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारी सब शुभ-कामनायें और मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा भी पूर्ण हो जाये।

यदि हम वेदमन्त्र के रहस्यों को, तत्त्व-ज्ञान को पूर्णतया समझना चाहते हैं तो हमें अपने स्तर को ऋषि के स्तर पर ले जाना होगा, अन्तर्मुखी होते हुए चिन्तन, मनन, निदिध्यासन करना होगा। ऐसा करना कहाँ तक सम्भव है? परन्तु **'जिन खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ'**। जितना-जितना हमारा विवेक, वैराग्य, अभ्यास बढ़ता जायेगा, आध्यात्मिक स्तर ऊँचा होता जाएगा, हम वेद-मन्त्र की गहराई में उतरते जायेंगे।

ऋग्वेद का एक ऐसा ही सारगर्भित मन्त्र साधक के मन को भावविभोर कर रहा है, वेदरूपी बगिया का एक सुन्दर फूल अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और साधक गहन चिन्तन में खो जाता है। वह मन्त्र इस प्रकार से है—

**ओ३म् तद्वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते। यत् ओहते वरुणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः॥**

(ऋ० 7.66.12)

मन्त्र के प्रथम चरण में वेदमाता आदेश दे रही है—ऐ साधक, तुम आज ही ब्रह्ममुहूर्त में, सूर्यदेवता के उदय होने के समय उस परमपिता परमात्मा को वेद-मन्त्रों के द्वारा मना लो। अब प्रश्न उठता है कि क्या ईश्वर भी रूठ जाया करता है? अरे हमने तो सुना था, जाना था कि ईश्वर तो सदैव समभाव में रहता है, समरस है। कोई उसका सुमिरन करे या न करे, वेद-प्रशस्त मार्ग पर चले या न चले, इन सबसे उसकी समता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। वह किसी से भी, चाहे वह आस्तिक हो या नास्तिक कोई भेद-भाव, राग-द्वेष नहीं करता। उसके द्वारा प्रदत्त सृष्टि की सारी नेमतें, जैसे सूर्य की धूप, वायु, जल आदि सबके लिए एक समान है। इतना ही नहीं सब जीवों को सत्य पथ पर चलने के लिए समान रूप से प्रेरित करता है। ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना तो हम अपने ही कल्याण के लिए करते हैं, उसके गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करते हुए आनन्द प्राप्त करने के लिए, न कि उसे प्रसन्न करने के लिए।

परन्तु प्रश्न तो वहीं का वहीं खड़ा है। वेदमाता तो कह रही हैं कि उसे सूर्य के उदय होते ही मना लो। आइये, अपने चिन्तन को आगे बढ़ाते हुए विचार करते हैं कि इस संसार में कोई कैसे रूठता है। इस संसार में दो प्रकार के मनुष्य हैं—सज्जन और दुर्जन। दोनों के रूठने में बहुत अन्तर है। जब एक दुर्जन व्यक्ति रूठ जाता है तो उससे केवल अनिष्ट और हानि की ही संभावना हो सकती है, न जाने कब क्या कर बैठे, यही शंका रहती है। उसके रूठने से कोपभवन जैसे दृश्य ही नजर आते हैं। कैकेयी के रूठने से क्या-का-क्या हो गया? परन्तु एक सज्जन के रूठने से किसी का अहित नहीं होता क्योंकि उसके हृदय में सदैव **'सर्वे भवन्तु सुखिनः...'** की भावना समाई रहती है। उसका रूठना तो एक माँ के रूठने जैसा होता है जिसके हृदय में बेटे के लिए सदैव प्यार, ममता और आशीर्वाद ही होता है। वह उसके साथ दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में, उसकी देखभाल में कमी नहीं आने देती। माँ के रूठने का तो केवल एकमात्र यही कारण होता है कि उसका पुत्र उसकी आज्ञाओं का पालन न कर अपने सुपथ से भटक गया होता है। माँ के रूठने का आभास तभी होता है जब पुत्र उससे कोई सुझाव माँगता है तो वह कह उठती है—'जाओ! मुझे कुछ नहीं पता, जो तेरे मन में आये वह करो, अब तुम बहुत बड़े हो गये हो।'

इसी प्रकार से जब हम वेद-मार्ग पर न चल, अपने अन्तिम लक्ष्य से भटक जाते हैं तो परमपिता परमात्मा हमसे रूठ जाता है। हम कैसे जानें कि ईश्वर हमसे रूठ गया है? महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास के माध्यम से हमें सन्देश देते हैं—**''जब आत्मा मन को और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता व चोरी आदि बुरी व परोपकार आदि अच्छी बात के लिए करने का विचार जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्द उत्साह उठता है, वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।''** ऐसा आभास सारी मानव जाति के लिए एक समान है। यदि किसी व्यक्ति विशेष को ऐसा आभास नहीं होता तो वह जान ले कि ईश्वर उससे रूठ गया है। व्यावहारिक शब्दों में हम कह उठते हैं कि उसकी आत्मा मर गई है, जो ईश्वर की आवाज को नहीं सुनती जबकि हम भलीभांति जानते हैं कि आत्मा तो अनिलम् है, अमृतम् है। क्या रूठा हुआ ईश्वर मान जायेगा? क्यों नहीं?

वेद-मन्त्र का दूसरा चरण कह रहा है कि वह तो हमारा मित्र है, मार्गदर्शक, न्यायकारी है। कब तक एक मित्र दूसरे मित्र से रूठा रहेगा? आवश्यकता है तो उसे पवित्र हृदय से मनाने की। वह ठहरा सर्वव्यापक सर्व-अन्तर्यामी। उसके आगे हमारा कोई दांव-पेंच, छल-कपट नहीं चलेगा। उसे मनाने का एक ही उपाय है और वह है उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हुए पूर्णरूपेण उसके प्रति समर्पित हो जाना, उसे वर लेना और उसी आज्ञाओं का पालन करना। उसकी आज्ञाओं का पालन करना ही उसके प्रति समर्पित होने की एक सीढ़ी है।

आइये, हम अपना ही परीक्षण निरीक्षण करते हैं। क्या हम ईश्वर की आज्ञाओं का पालन कर रहे हैं? ईश्वर तो आदेश देता है—

**'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।'** अर्थात् हे मनुष्य जो उपभोग सामग्री तुझे दी गई है उसका त्यागपूर्वक सेवन कर। जो कुछ तुझे प्राप्त हुआ है, उसमें से यज्ञ का भाग निकालकर जो यज्ञ-शेष बचे उसका

शेष पृष्ठ 8 पर....

# महर्षि के पूना प्रवचनों का संक्षिप्त परिचय

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

महर्षि दयानन्द ने पूना में 15 प्रवचन दिए थे जिनमें बहुत ही सारगर्भित बातें बताई थीं। उन प्रवचनों को हर व्यक्ति के लिए अति उपयोगी समझकर मैंने यह लेख लिखा है। इन प्रवचनों को पढ़कर मेरी भी कई शंकाओं का समाधान हुआ है। मेरा पूरा परिवार पुनर्विवाह के पक्ष में है। मेरे स्वर्गीय पूज्य पिता गोविन्दराम आर्य (प्रधान जी) ने अपने जीवन में 10-12 बाल-विधवाओं का विवाह, अच्छे योग्य विधुर या कुँवारे युवकों से पुनर्विवाह करवाकर उनको नरकीय जीवन से निकालकर स्वर्गीय जीवन प्रदान किया। साथ ही अपने तीन पुत्रों व पौत्रों का विवाह बाल-विधवाओं से करके अपनी बहू बनाकर उनका जीवन सुखी किया और मैंने स्वयं ने भी मेरे एक विधुर पुत्र चि० दिनेश का विवाह, एक विधवा जिसकी गोद में एक तीन-चार वर्ष की बच्ची भी थी, उससे विवाह करके लाया और पुण्य का भागी बना। परन्तु महर्षि ने अपने सत्यार्थप्रकाश में विधवा विवाह की स्वीकृति नहीं दी है और नियोग को माना है। पर उन्होंने पूना के बारहवें प्रवचन में पूर्णतः स्त्रियों को भी पुनर्विवाह की स्वीकृति दी है जिसको पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

**पन्द्रह प्रवचन इसी भांति हैं—**

प्रथम प्रवचन में महर्षि ने 'ओ३म्' को ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम बताया है जिसमें ईश्वर के सभी गुणों का समावेश है। दूसरे में श्रीकृष्ण को भद्र व आप्त पुरुष बताया है और हिरण्यगर्भ को ज्योति स्वरूप परमात्मा का नाम बताया है। इसी में उपासना का लाभ बताते हुए उपासना द्वारा आत्मा में सुख की अनुभूति होती है, ऐसा लिखा है। तीसरे प्रवचन में धर्म और अधर्म की विवेचना की है और मनु महाराज के धर्म के दस लक्षणों को बताते हुए इसमें अहिंसा को जोड़कर धर्म के ग्यारह लक्षण बताये हैं। प्राचीन काल में नारियाँ पढ़ती थी और विदुषी हुआ करती थीं। गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कत्यायनी आदि के नाम भी दिये हैं। चतुर्थ प्रवचन में ईश्वर प्राप्ति का मार्ग, मूर्तिपूजा न बतलाकर ज्ञान, कर्म, उपासना को बताया है। पूजा का अर्थ धूप खेना, भोग लगाना नहीं पर सत्कार व सम्मान करना बताया है। मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करना अशास्त्रीय बताया है। हिन्दू नाम, मुसलमानों का रखा हुआ है। इसका मतलब काला, काफिर, चोर आदि होता है, ऐसा बताया है। इनमें विमान विद्या तथा अस्त्र विद्या आदि सभी विद्याएँ हैं। ब्रह्मा के चार मुख थे, ऐसा कहा जाता है परन्तु चार मुख न होकर उनको चारों वेद कण्ठस्थ थे, इसलिए ब्रह्मा को चतुर्मुखी कहा जाता है। स्वामी जी ने षष्ठ प्रवचन में बताया है कि मनुष्य का सच्चा आभूषण सत्य बोलना है। ईश्वर, मनुष्यों को कर्मफल, दुःख व सुख के रूप में, पूर्वजन्म में किए कर्मों के अनुसार देता है। पशु-पक्षी केवल भोग योनि हैं और मनुष्य भोग योनि के साथ-साथ कर्म योनि भी है। इसे किये हुए कर्मों का फल ईश्वर देता है। गरुड़ादि पुराणों का खण्डन किया है। फलित ज्योतिष, देश में महाभारत के बाद आई है। महाभारत तक जन्म-पत्रिकाओं का कोई वर्णन नहीं मिलता तथा चौरासी लाख योनियां गप्प हैं। योनियों की संख्या केवल ईश्वर ही जानता है। योनियां बताना मनुष्यों के अधिकार से बाहर की चीज है। सप्तम प्रवचन में महर्षि ने बताया कि हवन करने से वायु शुद्ध होती है। ब्राह्मणों ने वेदों को कण्ठस्थ करके वेदों की रक्षा की। गाय आदि पशु धन के ह्रास से दूध-घृत की कमी होने से राष्ट्र कमजोर होता है। यज्ञों में पशुओं को मारकर डालना वेदविरुद्ध है आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। अष्टम प्रवचन में महर्षि ने कहा कि हमें ग्रन्थों की प्राचीनता का ध्यान न रखकर सत्य ग्रन्थों को ही मानना चाहिए। उन्होंने मनु महाराज की मनुस्मृति में जो स्वार्थी लोगों ने प्रक्षेप श्लोक घुसा दिये हैं उनके लिए बहुत रोष प्रकट किया है। महर्षि की विनम्रता इसी से प्रकट होती है कि उन्होंने कहा कि मैं सर्वज्ञ नहीं हूँ, मुझ से भी भूल हो सकती है, सो जो भी मेरी भूल को बतायेगा उसको मैं स्वीकार करूँगा और ठीक करने का प्रयत्न करूँगा। स्वामी जी ने 'आर्य' नाम को बहुत श्रेष्ठ बतलाया और हिन्दू नाम का विरोध किया। स्वामी जी ने कहा, 'हम लोग गुण भ्रष्ट हुए सो हुए, परन्तु नाम भ्रष्ट तो हमें नहीं होना चाहिए।' नवम प्रवचन में ऋषि ने बताया कि आर्यों को युद्ध विद्या अच्छी आती थी। इतिहास में इसके प्रमाण मिलते हैं। दूसरी बात यह कही कि हमें अंग्रेजों के गुणों को भी अपनाना चाहिये। दशम प्रवचन में स्वामी जी ने बताया कि राजा शान्तनु से देश की स्थिति बिगड़नी आरम्भ हुई और महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद से देश की हालत बिगड़ती ही जा रही है। स्वामी जी ने यह भी बताया कि तैतीस कोटि देवताओं का अर्थ तैतीस करोड़ नहीं बल्कि तैतीस प्रकार के देवता होते हैं। कोटि को करोड़ मानना भूल है। लोगों की यह धारण है कि विष्णु, महादेव, इन्द्र ये सब देवता अमर हैं, परन्तु स्वामी जी का कहना है कि जो जन्म लेगा वह अवश्य ही मरेगा, इसलिए अमर कोई भी नहीं है। स्वामी जी ने एक व्याख्यान में पाणिनि ऋषि की बड़ी प्रशंसा की और उनके द्वारा लिखी पांच पुस्तकें (1) शिक्षा, (2) उणादिगण, (3) धातुपाठ, (4) प्रातिपदिकगण, (5) अष्टाध्यायी का वर्णन भी किया। लोगों की यह धारणा कि अस्त्र-शस्त्र मन्त्रों के उच्चारण से चलते थे, यह भूल है। क्षत्रियों को धनुर्वेद सीखने के लिए बड़ा परिश्रम करना पड़ता था। उन्होंने यह भी बताया कि लोगों का कहना है छः दर्शनों में परस्पर विरोध है सो इनमें विरोध नहीं है बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। स्वामी जी ने बताया कि पतंजलि मुनि ने मुक्ति प्राप्ति की जो युक्तियां बताते हुए और परमेश्वर में चित्त लगाने की शिक्षा देते हुए यह कहीं नहीं बताया कि मूर्तिपूजा भी कोई साधन है, इसलिये उपासना के वर्णन में कहीं भी मूर्तिपूजा का सहारा नहीं मिलता है। उन्होंने यह भी बताया कि पराशर और आश्वलायन गृह्यसूत्रों में कहीं भी मूर्तिपूजा का नाम तक नहीं। कल्पसूत्रों में भी मूर्तिपूजा का कहीं वर्णन नहीं। स्वामी जी ने स्वयंवर विवाह की प्रशंसा की। स्वामी जी कहते हैं कि लोगों ने धर्म को बड़ी नर्म वस्तु मान ली। घास का तिनका तोड़ने में भी कुछ देर लगती है, पर धर्म के टूटने में कोई देर नहीं लगती। चोटी में गांठ न लगाई तो धर्म गया। खाने-पीने के बखेड़े को धर्म मानने लगे जिससे वीरों को कायर बना दिया।

द्वादश प्रवचन में पुनर्विवाह का समर्थन किया है। कहा है कि ईश्वर के लिए स्त्री-पुरुष समान हैं। जब पुरुष को पुनर्विवाह करने की आज्ञा है तो स्त्रियों को दूसरा विवाह करने से क्यों रोका जावे। इसमें नारी जाति को शिक्षा देने का समर्थन किया गया है। भ्रूणहत्या को महापाप बताया है। अन्ध-परम्परा का विरोध किया है। अवैदिक परम्पराओं का विरोध किया है। विदेशी भाषाएं सीखने का समर्थन किया है। महर्षि ने लिखा है कि जहाँ नीच और क्षुद्र लोग देश को चलाने में परामर्श देने लग जावें तो देश जरूर ही अवनति को प्राप्त होगा। जहाँ शकुनि जैसे संकीर्ण हृदय और क्षुद्र मनस्क जन सम्मति से राज्य चलाने लगे, कणिक शास्त्री धर्माधर्म का निर्णय का निर्णय करने लगे। वहाँ यदि घर में फूट उत्पन्न होकर घर वालों का विनाश हो गया हो तो आश्चर्य ही क्या है?

(**नोट**-यह बात हमारे देश और आर्यसमाज की शीर्ष संस्थाओं में घट रही है वर्तमान में)।

स्वामी जी ने मार्टिन लूथर के सुधारवादी विचारों की प्रशंसा की। यादवों के विनाश का कारण प्रमाद, विषयासक्ति, मदपान और फूट बतलाया। आदि शंकराचार्य ने वेदमत का प्रचार किया, पाखण्ड मतों का खण्डन किया, लिखा है।

त्रयोदश प्रवचन में महर्षि कहते हैं कि वेदों में कहीं पर भी मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा का विधान नहीं है। मूर्तिपूजा जैनियों से चली है और पुराणों में इसका वर्णन है। मूर्तिपूजा निंदनीय है और यह मात्र व्यावसायिक बन गई है। आर्यावर्त का रोग असाध्य नहीं है परन्तु वैदिक धर्म के प्रचार से ही देश का पुनरुद्धार सम्भव है। चतुर्दश प्रवचन में गायत्री मन्त्र को उपासना का सर्वश्रेष्ठ साधन बताया। ईश्वर और जीव का सम्बन्ध कैसा है, बताया। परमात्मा और जीवात्मा को एक मानना ठीक नहीं। उनका सम्बन्ध व्यापक और व्याप्य, सेव्य और सेवक का होता है। पंचदश प्रवचन में स्वामी जी ने जोशी अमरलाल जिसने स्वामी जी को पढ़ने के समय जो उपकार किया, उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। अपने ज्ञान को सब लोगों तक बांटने की कामना की। मेरे जैसे अनेक उपदेशकों से ही धर्मोन्नति सम्भव है, बताया। अपनी हार्दिक इच्छा ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करते हुए प्रकट की कि हे ईश्वर! सर्वत्र आर्यसमाजें कायम हों, जिससे मूर्तिपूजादि दुराचार दूर हो जावे, वेद शास्त्रों का सच्चा अर्थ सबकी समझ में आ जावे और उन्हीं के अनुसार लोगों का आचरण होकर देश की उन्नति हो। मुझे पूरी आशा है कि आप सब सज्जनों की सहायता से मेरी यह इच्छा पूर्ण होगी।

www.thearyasamaj.org



# प्रभु के पीछे न कि धन के

-: वेद-मन्त्र :-

**शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि॥ 1॥ 253॥**

प्रभु ने जीव से कहा था कि 'कहां भटकता है, मेरी मित्रता को स्वीकार कर, मेरी शरण में आ।' जीव अपने अनुभव से इसी परिणाम पर कि अन्तोगत्वा प्रकृति में आनन्द नहीं, इस अनुभव के आधार पर जीव प्रभु से कहता है कि 'शग्धि' आप शक्तिशाली हो। आप सब कुछ कर सकते हो, मेरा भी कल्याण करने में आप ही समर्थ हो ऊ=और हे [सुशचीपते]=सब उत्तम शक्तियों व कर्मों के स्वामिन् प्रभो! ऐ इन्द्र=सब ऐश्वर्यों के स्वामिन्! आप विश्वाभिः ऊतिभिः=सब रक्षणों से युक्त हो। आपकी शरण में आ जाने पर मुझे कौन आसुरवृत्ति पराभूत कर सकती है? आपसे सुरक्षित होकर मैं भी शक्तिशाली व उत्तम ऐश्वर्य वाला बनता हूं। तो हमने तो आज यह निश्चय कर लिया है कि [भगं न]=हम धन के पीछे न जायेंगे।

भग—धन का देवता अन्धा है, ऐश्वर्य मदमत्त को धर्माधर्म का ज्ञान नहीं होता। लक्ष्मी का वाहन उल्लू है वस्तुतः धनी आदमी कभी ठीक दृष्टिकोण से सोच नहीं पाता। धनियों का अग्रणी कुबेर कुत्सित शरीर वाला है—उसका पुत्र नलकूब=टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों वाला वक्र शरीर वाला है। एवं धन शरीर—दृष्टि व ज्ञान सभी को विकृत कर देता है। इसके पीछे जाकर क्या करना?

[हि]=निश्चय से हम तो ऐ प्रभो! [त्वा अनुचरामसि]=आपका अनुगमन करते हैं। आप (१) यशसं=यशस्वी हैं—आपका अनुगमन करके मेरा जीवन भी यशोन्वित होता है। मेरे जीवन में कोई भी ऐसा कार्य नहीं होता जो कि मुझे यशस्वी बनाने वाला न हो। कलंकपूर्ण कर्मों से मैं कोसों दूर रहता हूं। (२) [वसुविदं]=निवास के लिये आवश्यक धन को आप प्राप्त कराने वाले हैं। आपका अनुयायी बनकर मैं भूखों थोड़े ही मरता हूं। फालतू धन होता ही नहीं जो कि विलास का कारण बने। (३) [शूर]=आप शूर हैं 'शृ हिंसायाम्'। आप मेरी शत्रुभूत अशुभ वृत्तियों को समाप्त कर देने वाले हैं। धन के पीछे जाने से जहां वासनाओं को प्रबलता प्राप्त होती थी और मैं उनका शिकार बनकर अपने को क्षीणशक्ति कर लेता था, आज आपकी शरण में आकर मैं वासनाओं का संहार करके अपने को तेजस्वी बना पाता हूं। और सचमुच इस मंत्र का ऋषि 'भर्ग'—तेजस्वी बनता हूं। वस्तुतः ऐसा बनना ही आपका गायन करने वाला बनना है सो मैं 'प्रागाथ' होता हूं।

**भावार्थ**—हम धन के पीछे न जाकर प्रभु के अनुयायी बनें। **—आचार्य बलदेव**

**हरियाणा सोसायटी एक्ट-2012 के अनुसार कोलेजियम चुनाव**
**आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्दमठ रोहतक**
**दिनांक 10 दिसम्बर 2013** दिनांक : 03-12-2013

## संशोधित चुनाव-कार्यक्रम विवरण

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | नामांकन पत्र वितरण एवं नामांकन फार्म भरना<br>समय प्रातः 9 से 5 बजे तक<br>समय प्रातः 9 से 12 बजे तक<br>स्थान : सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक<br>नामांकन फीस : 200/- रुपये (Non-refundable) | — | 5 दिसम्बर 2013<br><br>6 दिसम्बर 2013 |
| 2. | चुनाव लड़ने वाले सदस्यों की सूची समय : सायं 5 बजे तक | — | 6 दिसम्बर 2013 |
| 3. | नामांकन पत्रों की जांच/अवैध पाये गये नामांकन पत्रों की सूची | — | 7 दिसम्बर 2013 |
| 4. | चुनाव लड़ने वाले वैध पाये गये सदस्यों की सूची<br>समय : सायं 2 से 5 बजे तक | — | 7 दिसम्बर 2013 |
| 5. | नामांकन वापस लेने की तिथि समय : प्रातः 9 से 2 बजे तक | — | 8 दिसम्बर 2013 |
| 6. | चुनाव लड़ने वाले सदस्यों की अन्तिम सूची व<br>चुनाव-चिह्न आवंटित करना समय : सायं 2 से 6 बजे तक | — | 8 दिसम्बर 2013 |
| 7. | चुनाव प्रचार समाप्त समय : सायं 6 बजे तक | — | 9 दिसम्बर 2013 |
| 8. | कोलेजियम चुनाव/मतदान तिथि समय : प्रातः 11 से सायं 3 बजे तक | — | 10 दिसम्बर 2013 |
| 9. | मतगणना व चुनाव परिणाम जारी करना<br>एवं विजयी उम्मीदवारों की सूची जारी करना | — | 10 दिसम्बर 2013 |

**नोट-** 1. कोलेजियम सूची सभा द्वारा संचालित **गुरुकुल कुरुक्षेत्र** की बेबसाइट **www.gurukulkurukshetra.com** पर उपलब्ध है।
2. चुनाव के लिए सभा द्वारा जारी किए गए **पहचान-पत्र** अवश्य साथ लाएं। जो **पहचान-पत्र** लाएगा उसी का मतदान डलवाया जाएगा।
3. यदि किसी मतदाता को पहचान-पत्र नहीं मिला या गुम हो गया है उस सूरत में उसके पास मूलरूप में चुनाव आयुक्त (भारत) से जारी **पहचान-पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस या राशनकार्ड,** इनमें से कोई एक साथ लाएं।

**( धर्मपाल आर्य )**
चुनाव अधिकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

सत्यवीर शास्त्री
**( सत्यवीर शास्त्री )**
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

**हरियाणा सोसायटी एक्ट-2012 के अनुसार**
**आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्दमठ रोहतक के त्रिवार्षिक चुनाव के लिए**
**पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के चुनाव सम्बन्धी**

## संशोधित निर्धारित समय-सारणी

दिनांक : 03-12-2013

| क्र० | विषय | दिनांक | समय |
|---|---|---|---|
| 1. | नामांकन पत्र भरना<br>नामांकन फीस 1000/- रु० स्थान : सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक | 11.12.13 | प्रातः 10 से 1 बजे तक |
| 2. | नामांकन पत्रों की जांच | 12.12.13 | प्रातः 9 से 4 बजे तक |
| 3. | चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की सूची जारी करना | 13.12.13 | सायं 4 बजे तक |
| 4. | नामांकन पत्र वापिसी | 14.12.13 | प्रातः 10 से 2 बजे तक |
| 5. | चुनाव लड़ने वाले सदस्यों की अन्तिम सूची | 14.12.13 | सायं 4 बजे तक |
| 6. | चुनाव-चिह्न आवंटित करना | 15.12.13 | प्रातः 9 से 3 बजे तक |
| 7. | चुनाव-प्रचार समाप्त | 24.12.13 | सायं 4 बजे |
| 8. | कोलेजियम/साधारण सभा बैठक | 26.12.13 | प्रातः 9 से 10 बजे तक |
| 9. | पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव<br>स्थान : सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक | 26.12.13 | प्रातः 11 से 3 बजे तक |
| 10. | वोटों की गिनती तथा परिणाम की घोषणा | 26.12.13 | वोटिंग के तुरन्त बाद |
| 11. | विजयी उम्मीदवारों की सूची | 26.12.13 | परिणाम के तत्पश्चात् |
| 12. | विजयी उम्मीदवारों को प्रमाण-पत्र | 26.12.13 | उम्मीदवारों की सूची जारी करने के पश्चात् |

**नोट-** 1. नामांकन फार्म की जमा की गई राशि 1000/- वापिस नहीं होगी।
2. चुनाव लड़ने वाले इच्छुक उम्मीदवारों को कोलेजियम के 105 सदस्यों में से **एक सदस्य** द्वारा फार्म को **सत्यापित** करवाना आवश्यक होगा।
3. कोलेजियम/साधारण सभा की बैठक चौ० लखीराम आर्य अनाथालय दयानन्दमठ रोहतक में होगी।
4. चुनाव के लिए सभा द्वारा जारी किए गए **पहचान-पत्र** अवश्य साथ लाएं। जो **पहचान-पत्र** लाएगा उसी का मतदान डलवाया जाएगा।
5. यदि किसी मतदाता को पहचान-पत्र नहीं मिला या गुम हो गया है उस सूरत में उसके पास मूलरूप में चुनाव आयुक्त (भारत) से जारी **पहचान-पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस या राशनकार्ड,** इनमें से कोई एक साथ लाएं।

**( धर्मपाल आर्य )**
चुनाव अधिकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ. रोहतक

सत्यवीर शास्त्री
**( सत्यवीर शास्त्री )**
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

# सर्वज्ञ, सर्वव्यापक व निराकार ईश्वर की कृति है यह साकार जगत्

❑ मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य इस संसार को देखकर अनुमान करता है कि इसे बनाने वाली सत्ता कौन है, कैसी है व कहां है? वैज्ञानिकों ने भी इस प्रश्न पर अपने तौर-तरीकों से विचार किया। उनके तौर-तरीके भौतिक पदार्थों के अध्ययन से जुड़े तौर-तरीकों से सम्बन्धित रहे हैं। ईश्वर के अभौतिक होने से वह इन वैज्ञानिकों की पकड़ में न आ सका। ईश्वर की तरह हमारी आत्मा भी अभौतिक है। यदि वह आत्मा से ईश्वर के स्वरूप की तुलना करते, विचार व चिन्तन करते तो सम्भवतः वह ईश्वर के कुछ समीप पहुंच सकते थे। आध्यात्मिक व योगीजन अपनी आत्मा, मन व बुद्धि को ईश्वर में लगाते हैं तो उन्हें ईश्वर के अस्तित्व की अनुभूति हो जाती है। ध्यान-चिन्तन की साधना में तत्पर रहकर न केवल वह ईश्वर को ही जान लेते हैं अपितु उसका साक्षात्कार अर्थात् उसका निभ्रान्त ज्ञान भी प्राप्त करने में सफल होते हैं। यदि एप्रोच या मार्ग सही न हो तो सफलता नहीं मिलती है। ऐसा ही हम वैज्ञानिकों के मामले में भी पाते हैं। उनकी एप्रोच-मार्ग ठीक नहीं है, उन्हें ईश्वर प्राप्ति का अपना मार्ग, एप्रोच व तरीका बदलना होगा जिससे वह यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकें। यह बात हम किसी अहंकारवश नहीं कह रहे हैं अपितु सबके प्रति पूरे सन्मान, सहृदयता व सार्वत्रिक हित की दृष्टि से कह रहे हैं।

वैज्ञानिक अपने तरीके से काम करते हैं, ईश्वर को भी उसी प्रकार सिद्ध करना चाहते थे, वह हो न सका, तो उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया और कहा कि यह सारा जगत् स्वयमेव या स्वतः निर्मित है। वैज्ञानिक ईश्वर को इसलिए नहीं मानते कि वह दृष्टिगोचर नहीं होता और न उसकी अनुभूति सामान्यतः सभी लोगों को होती है। वेदों व उपनिषद में ईश्वर के जिस स्वरूप का वर्णन है उसे वैज्ञानिक जानते ही नहीं और जानने का प्रयत्न भी नहीं करते। हमें लगता है कि यदि शीर्ष वैज्ञानिक वेद व उपनिषद् में चर्चित ईश्वर के स्वरूप को पहले जान लें फिर विवेचना कर ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करें तो यह कुछ सीमा तक उचित हो सकता है। हमें वैज्ञानिकों के ईश्वर की सत्ता या अस्तित्व की अनुपस्थिति अथवा अभाव से सम्बन्धित तर्क व कारण ज्ञात नहीं हैं अन्यथा हम उनके उत्तर ढूंढते। दुनिया का यह सबसे बड़ा आश्चर्य है कि आज के वैज्ञानिक जो सत्य की बड़ी-बड़ी खोजों को करते हैं, वह ईश्वर को बिना पढ़े, समझे व तर्क-वितर्क किए अस्वीकार कर देते हैं। हम विनम्रता पूर्वक यह कहना चाहते हैं कि क्या आज तक किसी वैज्ञानिक ने वेद व उपनिषद् वर्णित ईश्वर के स्वरूप की समीक्षा कर पश्चात् ईश्वर की सत्ता के असिद्ध होने पर उससे इनकार किया? हमारे सीमित ज्ञान में इस शंका का उत्तर 'न' में मिलता है। इसका अर्थ तो यही हुआ कि हमारे वैज्ञानिक बन्धु किन्ही कारणों से ईश्वर के अस्तित्व में दोहरे मापदण्ड या पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाते हैं। बुद्धिजीवी होने के कारण हम उनसे ऐसी अपेक्षा नहीं रखते।

मनमोहन कुमार आर्य

आइये देखते हैं कि योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि जिन्होंने ईश्वर के साक्षात्कार कराने की विद्या का ग्रन्थ लिखा है, क्या वे ज्ञानी, विद्वान् या वैज्ञानिक नहीं थे, क्या उनके ग्रन्थ को पढ़कर व उसके अनुरूप विधि-विधान का पालन और साधना करके ईश्वर को जाना व प्राप्त नहीं किया जा सकता और क्या ईश्वर का साक्षात्कार असम्भव है? इसका अर्थ तो यह होगा कि आज तक देश-विदेश में कही भी किसी को ईश्वर का साक्षात्कार हुआ ही नहीं। यदि ऐसा है तो एक प्रश्न यह भी विचारणीय बनता है कि ईश्वर के होने का विचार सारे विश्व में कैसे फैला? यह तो सबसे बड़ा आश्चर्य होगा कि एक अस्तित्वहीन सत्ता को संसार का अधिकतर या अधिकतम भाग मानता है। यह जरूर है कि जब कोई विद्या पूरी तरह सुरक्षित न रहे तो उसको समझने में भ्रान्तियां होती है। इन भ्रान्तियों से सारे विश्व में ईश्वर के बारे में नाना प्रकार की कल्पित व असत्य मान्यतायें उत्पन्न हुई हैं। कालान्तर में इससे देशों व लोगों के राजनीतिक, आर्थिक स्वार्थ व लोकैषणा आदि मुद्दे भी जुड़ गये और उन्होंने यह मान लिया कि कुछ भी हो, ईश्वर व धर्म विषयक उनके अपने विचारों व विचारधारा से इतर सत्य, तर्कसंगत व सृष्टिक्रम के अनुकूल विचारों को मानना ही नहीं है। कुछ कमियां सत्य के प्रचारकों में भी रहीं हैं। आज वेद की सत्य विचारधारा का प्रचार-प्रसार प्रायः नगण्य है। आर्यसमाजों में जहां ईश्वर के सत्य स्वरूप का सबको ज्ञान है, वहां पदों के लिए मारामारी मची हुई है। स्थानीय न्यायालयों व उच्च न्यायालयों तक में वर्षों से मामले अनिर्णीत हैं। बहुत से आर्यनेताओं का ध्यान वेदप्रचार पर न होकर अपने पद को स्थिर रखने में लग रहा है जिसके कारण वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार में सफलता नहीं मिल रही है।

हमारा ज्ञान व अनुभव है कि ईश्वर को जाना जा सकता है, उसका अनुभव किया जा सकता है और साक्षात्कार भी किया जा सकता है। यह विचार करने व ध्यान देने योग्य बात है कि संसार में 2 चेतन तत्व हैं, एक ईश्वर व दूसरा जीवात्मा। दोनों ही आंखों से नहीं दिखाई देते। जीवात्मा मनुष्य, पशु, पक्षी, जलचर, नभचर व थलचर में विद्यमान होता है जिसे इन प्राणियों के शरीर को देखकर, विचार व विवेक से उन्हें जानते हैं कि इस प्राणी के जड़ शरीर के भीतर एक चेतन तत्व जीवात्मा अवश्य है। क्या कोई व्यक्ति ऐसा भी है जो कहे कि वह जीवात्मा का अस्तित्व नहीं मानता। यदि कोई जीवात्मा के स्वतन्त्र अस्तित्व को नहीं मानता तो उसे सिद्ध करना या प्रमाण देना है? अचानक हृदयाघात से मृत्यु क्यों हो जाती है। शरीर का कोई तत्व तो कम नहीं हुआ। हां श्वसन क्रिया अवरुद्ध हुई है। जब सब रोगों के उपचार का प्रयास किया जाता है और रोगी स्वस्थ भी होते हैं, तो फिर इस श्वसन प्राणाली का उपचार भी खोजा जाना चाहिये। 2 अरब लगभग वर्षों से यह संसार चल रहा है। आज तक किसी ने भी इसके उपचार के बारे में सोचा नहीं। इसका सीधा अर्थ है कि सभी चिकित्सक व वैज्ञानिक मानते हैं कि मृत्यु का कारण केवल श्वसन प्रणाली का बन्द होना ही नहीं है अपितु शरीर में विद्यमान चेतन तत्व का शरीर से पृथक होना है जिसे वापिस शरीर में लौटाया नहीं जा सकता।

जिस चेतन जीवात्मा की उपस्थिति में शरीर अपनी समस्त क्रियायें करता है तो उसकी अनुपस्थिति में वह निक्रिय हो जाता है, क्यों? यदि प्राणियों के शरीरों में कोई चेतन तत्व नहीं है तब मृत्यु के समय शरीर एकाएक निर्जीव व अचेतन, निष्क्रिय, ज्ञानशून्य या कर्महीन क्यों हो जाता है? हृदय की धड़कन जो वर्षों से चल रही थी, प्राण चल रहे थे वह एक ही क्षण में बन्द, रुक व निष्क्रिय क्यों हो गये। मृत्यु होने के बाद उसमें विकार होना आरम्भ क्यों हो जाता है, क्यों उसमें दुर्गन्ध का आना आरम्भ हो जाता है? जीवनकाल में तो ऐसा नहीं था। यदि आत्मा को मान लें

शेष पृष्ठ 5 पर....

**भूमिका**

**इस लेख में जो मुख्य केन्द्रीय विचार है वह यह है वैज्ञानिक खोजें शरीर में विद्यमान निराकार जीवात्माओं द्वारा प्रेरित होती हैं। शरीर तो आत्मा का आज्ञाकारी उपकरण या एक यन्त्र मात्र है। जिस प्रकार जीवात्मा से प्रेरित शरीर नाना प्रकार की रचनायें यथा कम्प्यूटर, हवाई जहाज, मोबाइल, रेल आदि रचता या बनाता है, इसी प्रकार ईश्वर भी पूर्व कल्प के मृत शरीरों की जीवात्माओं के सुख व मुक्ति के लिए यह सृष्टि या ब्रह्माण्ड को बनाता है। यह वैज्ञानिक सत्य है। वैज्ञानिकों को ईश्वर व जीवात्मा के अस्तित्व को वैदिक विचारों के अनुरूप चिन्तन कर स्वीकार करना चाहिये।**

**यह जरूर है कि जब कोई विद्या पूरी तरह सुरक्षित न रहे तो उसको समझने में भ्रान्तियां होती है। इन भ्रान्तियों से सारे विश्व में ईश्वर के बारे में नाना प्रकार की कल्पित व असत्य मान्यतायें उत्पन्न हुई हैं। कालान्तर में इससे देशों व लोगों के राजनीतिक, आर्थिक स्वार्थ व लोकैषणा आदि मुद्दे भी जुड़ गये और उन्होंने यह मान लिया कि कुछ भी हो, ईश्वर व धर्म विषयक उनके अपने विचारों व विचारधारा से इतर सत्य, तर्क संगत व सृष्टिक्रम के अनुकूल विचारों को मानना ही नहीं है। कुछ कमियां सत्य के प्रचारकों में भी रही हैं। आज वेद की सत्य विचारधारा का प्रचार-प्रसार प्रायः नगण्य है।**

# आर्यसमाज करीरा ने रचा इतिहास

आर्यसमाज करीरा जिला महेन्द्रगढ़ के सौजन्य से सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रचारमन्त्री श्री चन्द्रदेव के मार्गदर्शन में साप्ताहिक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन 9 से 15 नवम्बर, 2013 तक बाबा भीखमदास मन्दिर के प्रांगण में किया गया। प्रतिदिन लगभग प्रात: 8.00 बजे से दोपहर 12.00 बजे व दोपहर बाद 2.30 बजे से सायंकाल 5.30 बजे तक यज्ञ, यज्ञोपवीत संस्कार, भजन, उपदेश के कार्यक्रम के साथ-साथ सायंकाल 5.30 से 7.30 बजे तक विद्यार्थियों एवं युवाओं के लिए आर्यवीर चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से आर्यवीर दल गुरुकुल झज्जर द्वारा किया गया। गुरुकुल के ब्र० ध्रुव आर्य, रोनकार्य, व मनीष शास्त्री द्वारा वेदपाठ किया गया। वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक चन्द्रदेव द्वारा शिविरार्थियों को व्यायाम प्रशिक्षण देने के साथ-साथ दोनों समय प्रेरणादायक उद्‌बोधन भी निरन्तर होता रहा, जिससे प्रभावित होकर सैकड़ों युवाओं, शिविरार्थियों, माताओं-बहनों एवं बुजुर्गों ने वैदिक संस्कृति का चिह्न यज्ञोपवीत धारण करके आजीवन शराब, अण्डे, मांस, मछली, धूम्रपान, तम्बाकू, ताश-चौपड़, जुआ आदि दुर्व्यसनों से दूर रहकर महर्षि दयानन्द के सपनों का स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारयुक्त, व्यसनमुक्त भारत के निर्माण का संकल्प लिया।

सुख, शान्ति, समृद्धि हेतु किये गये ऋग्वेद पारायण यज्ञ में लगभग 200 किलो से अधिक घृत व 250 किलो से अधिक सामग्री से लगभग 11000 आहुतियां दी गई, जिसका सम्पूर्ण खर्च ग्रामवासियों के सहयोग से पूरा हुआ। शिविर समापन एवं यज्ञ की पूर्णाहुति पर इलाके के तपस्वी सन्त स्वामी शरणानन्द जी महाराज का प्रेरणादायी आशीर्वचन तथा अन्तर्राष्ट्रीय भजनोपदेशिका पुष्पा शास्त्री के समाज सुधारात्मक भजनों ने सभी को उद्वेलित कर दिया।

**कार्यक्रम की कुछ विशेषताएँ—**

1. इश्तिहार, बैनर, पोस्टर आदि पर एक रुपया भी खर्च नहीं किया गया।

2. पूरे कार्यक्रम में राजनेता या दान लेने की भावना से किसी भी सज्जन को नहीं बुलाया गया। पूरा खर्च गांव वालों ने स्वेच्छा से उठाया।

3. कार्यक्रम पौराणिक स्थान पर होते हुए विशुद्ध रूप से वैदिक रीति से हुआ।

4. सम्पूर्ण कार्यक्रम में किसी की भी मिथ्या बड़ाई नहीं की गई और न ही मालाएं आदि डालने में समय व्यर्थ किया।

5. आर्यसमाज करीरा के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं जिनमें प्रधान गणेशी लालार्य, रामनिवासार्य, हुक्मचन्द्रार्य, गणपतार्य, मनफूलार्य, धर्मेन्द्रार्य, धर्मसिंह आर्य आदि ने निष्काम भाव से सेवा की।

शान्तिपाठ के पश्चात् शुद्ध देशी घी से निर्मित प्रसाद का वितरण हुआ। सभी ने सम्पूर्ण कार्यक्रम की खूब प्रशंसा की।

—मनीष शास्त्री, व्यायाम शिक्षक

## सर्वज्ञ, सर्वव्यापक व निराकार.... पृष्ठ 4 का शेष....

तो फिर सारे प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि प्रत्येक जीवित प्राणी के शरीर में एक चेतन तत्व जीवात्मा के रूप में विद्यमान रहता है। छोटे बच्चे को बिना सिखाये माता का दुग्धपान करना, सोते हुए हंसना, रोना, आयु बढ़ने के साथ उनकी आकृति-प्रकृति का भिन्न भिन्न होना, कोई शारीरिक शक्ति में अधिक, कोई ज्ञान ग्राहकता में अधिक, कोई शारीरिक बनावट में सुन्दर, कोई कुरूप आदि, यह शरीर में विद्यमान एक अविनाशी व जन्म-मरण धर्मा जीवात्मा के पुनर्जन्म व उसके अस्तित्व के प्रमाण हैं।

इन उदाहरणों से हम यह कहना चाहते हैं कि ईश्वर व जीवात्मा का स्वतन्त्र अस्तित्व है जो अपने स्वभाविक रूप में चेतन तत्व हैं। यह सृष्टि जड़ है एवं इन चेतन सत्ताओं से सर्वथा पृथक है। हमारे वैज्ञानिकों ने आज तक जितनी भी खोजें व आविष्कार किए हैं वह सब उन्होंने अपने शरीर या इन्द्रियों से नहीं किए हैं अपितु इनके सहयोग से वह सब उनकी अत्यन्त सूक्ष्म एवं अल्प प्रमाण आत्मा, सिर के बाल के अग्रभाग के एक बहुत छोटे टुकड़े के 1,000 वें भाग से भी सूक्ष्म आत्मा का परिमाण है, द्वारा निष्पादित व कृतकार्य होते हैं। आत्मा संकल्प मात्र से शरीर को चलाती है। शरीर, मन व बुद्धि सहित इसकी सभी इन्द्रियां स्वस्थ अवस्था में आत्मा के आदेशों का पूर्ण पालन व अनुगमन करती हैं। संकल्प व विचार करने मात्र से हाथ उठ जाता है, व्यक्ति चलता फिरता व भ्रमण करता है, बुद्धि चिन्तन में लग जाती है, हाथों को जैसा आदेश दें वही कार्य करते हैं, पुस्तक पढ़ने की इच्छा करने पर वह पुस्तक को पकड़कर आंखों के पास रखते हैं, भोजन करते समय हाथ से भोजन को उठाकर मुंह में डालते हैं, दांत अपना कार्य करते हैं, इसी प्रकार सब इन्द्रियां, अंग-प्रत्यंग व अवयव अपना-अपना काम करते हैं। परन्तु ध्यान देने योग्य मुख्य बात यह है कि यह शरीर के अंग स्वयं अपने आप कुछ नहीं करते, आत्मा की आज्ञा मिलने पर ही करते हैं। इससे यह सिद्ध है कि आत्मा शरीर को चलाती व इच्छानुसार काम लेती है। ईश्वर सबसे बड़ा, बृहद् परिमाण, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, निराकार, सृष्टि-निर्माण कार्य का अनुभव रखने वाला है। वह निराकार होकर भी इस सृष्टि से इस ब्रह्माण्ड को बनाने की क्षमता रखता है जैसे कि आत्मा शरीर की सहायता से इच्छानुसार नाना प्रकार के कार्य करती है। अत: किसी को भी निराकार, सगुण व निर्गुण ईश्वर से इस समस्त सृष्टि व ब्रह्माण्ड की रचना में सन्देह व शंका नहीं करनी चाहिये। इसके लिए सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, गीता, मनुस्मृति, उपनिषद्, दर्शन व वेद आदि ग्रन्थों को पढ़ना चाहिये जिससे सभी शंकाओं का निवारण सरलता से हो सके।

हमारा इस लेख को लिखने का प्रयोजन यह प्रकट करना है कि मनुष्य जो-जो कार्य करता है वह उसका एकमात्र शरीर स्वयं स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं करता अपितु इसमें मुख्य रूप से निराकार जीवात्मा की प्रेरणा, शक्ति, निर्देश, संकल्प व विचार होते हैं। सभी वैज्ञानिक खोजों का आधार वैज्ञानिकों की जीवात्मायें ही रही हैं जिन्हें ईश्वर ने मनुष्य जन्म दिया। उन जीवात्माओं में उनके पूर्व जन्मों के संस्कारों की उपस्थिति व इस जन्म के पुरुषार्थ के अनुसार उन्हें ईश्वर की प्रेरणायें उसके आत्मस्थ व जीवस्थ स्वरूप से प्राप्त हुईं जिससे वह इच्छित विषयों का ज्ञान प्राप्त कर वैज्ञानिक खोजें व आविष्कार कर सके जिसका चिन्तन उन्होंने किया था। यद्यपि इसमें वैज्ञानिकों के जड़ व पार्थिव शरीरों का भी कुछ योगदान है, परन्तु सर्वाधिक श्रेय निराकार चेतन तत्व जीवात्मा व ईश्वर की प्रेरणा को है। हम आशा करते हैं कि पाठक इस विषय में स्वयं चिन्तन कर ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप सहित ब्रह्माण्ड की रचना को भी समझने में यत्किंचित् सक्षम व सफल होंगे। हम आशा करते हैं कि आने वाले समय में, देर या सवेर, वैज्ञानिक भी वेद, उपनिषद्, दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका आदि सत्य ग्रन्थों का अध्ययन कर इस परिणाम पर पहुंचगें कि ईश्वर व जीवात्मा का स्वतन्त्र अस्तित्व है तथा यह संसार ईश्वर ने जीवात्माओं के लिए बनाकर उनके पूर्व जन्म-जन्मान्तर के पुण्य-पाप कर्मों के फलों के भोग व अपवर्ग अर्थात् मुक्ति के लिए उन्हें प्रदान किया है। यह दृश्यमान संसार या भौतिक जगत् उस निराकार चेतन ईश्वर की साकार रचना व कार्य है।

**सत्यार्थप्रकाश**

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

**भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—**

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।—सभामन्त्री

# वेद की मधुविद्या में गोमाता

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

अथर्ववेद 9।1।22 में मधुविद्या के सात रूप इस पृथ्वी पर हैं यह बताया गया है। एक मधुरता ब्राह्मणों में ज्ञान रूप से है, दूसरी मधुरता क्षत्रियों में पराक्रम के रूप में विद्यमान है, इसी प्रकार गौ, बैल, चावल, जौ और शहद में मधुरता है। अत: जो मनुष्य यह बात जानता है वह इन सात पदार्थों से अपनी उन्नति करता है। वेद का मन्त्र कहता है—

**यो वै कशाया: सप्त मधुनि वेद मधुमान् भवति।**
**ब्राह्मणश्च राजा च धेनुश्चानड्वांश्च व्रीहिश्च यवश्च मधु-सप्तमम्॥**

(अथर्व० काण्ड 9। सूक्त 1। मन्त्र 22)

स्वामी वेदरक्षानन्द जी

**अर्थ :**—(य: वै कशाया: सप्त मधूनि वेद) जो इस कशा के सात मधु जानता है, वह (मधुमान् भवति) मधुवाला होता है। (ब्राह्मण: च राजा च) ब्राह्मण: और राजा (धेनु: च अनड्वान् च) गाय और बैल, (व्रीहि: च यव: च) चावल और जौ तथा (मधु सप्तमम्) सातवाँ मधु है।

**भावार्थ**—जो इस गौ के सात मीठे रूप जानता है मधुर बनता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, गाय, बैल, चावल, जौ और शहद सातवां है। गौ के ये सात मीठे रूप हैं। इन **सात मधुओं का स्वरूप**—

'ब्राह्मण' पहला मधु है। इसके पास ज्ञान का मीठा रस रहता है। यही साक्षात् अमृत है, ज्ञान और विज्ञान इसमें सम्मिलित हैं अभ्युदय और नि:श्रेयस की सिद्धि इस ज्ञान पर अवलम्बित है। ब्राह्मण के अधीन राष्ट्र का अध्ययन अध्यापन है अर्थात् यही राष्ट्र की भावी सन्तान उदयोन्मुख करता है। यह 'ज्ञानमधु' है हर एक मनुष्य और प्रत्येक युवा इसका सेवन करे।

'राजा' दूसरा मधु है। (रञ्जयति इति राजा) प्रजा का रंजन करने वाला राजा होता है। जो प्रजा के उत्साह को कुचलता है उसका नाम राजा नहीं। राजा शब्द से सब क्षत्रियों का ग्रहण हो जाता है। दु:ख से प्रजा की रक्षा करना और उसका रंजन करना, यही राज्यशासन का कार्य है। यहाँ (प्रजा रंञ्जन रूप) मधु देने वाला राजा होता है। राष्ट्र का प्रत्येक मनुष्य इस रक्षा कार्य करने में समर्थ होना चाहिये, तभी यह मधु प्रजा को प्राप्त होता है। जहाँ ब्राह्मण और क्षत्रिय मिल जुलकर राष्ट्र की उन्नति करने में तत्पर होते हैं वही राष्ट्र उन्नत होता है।

इसके पश्चात् तीसरा मधु ''गौ'' है। ज्ञान और रक्षा होने के पश्चात् गाय का दूध रूपी अमृत प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त होना चाहिये। यह अमृत है और यही जीवन है। चतुर्थ मधु ''बैल'' (साण्ड) है। उत्तम गौ की उत्पत्ति साण्ड पर है इसलिये बैल की गणना मधु में की है। इसके अतिरिक्त हमारी खेती भी बैल पर निर्भर है।

आगे भी तीन मधु चावल, जौ और शहद हैं। ये उत्तम भक्ष्यान्न हैं। ये चावल और जो बुद्धिवर्धक हैं और शरीर की स्वस्थता के लिये यह उत्तम हैं। मधु अर्थात् शहद तो सर्वोत्तम स्वादु पदार्थ है। वनस्पतियों में उत्तम फूल और फलों में मधु उत्तम/ऋषियों का यही चावल, जौ और शहद अन्न था, इसीलिये उनकी बुद्धि अयन्त कुशाग्र होती थी। इस प्रकार सात मधुओं का विषय है।

ऋग्वेद मण्डल 1, सूक्त 90, मन्त्र 6, 7, 8 में मधु विद्या माहात्म्य वर्णित है। वे मन्त्र इस प्रकार हैं:—

**मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव:। माध्वीर्न सन्त्वोषधी:॥**
**मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रज:। मधु द्यौरस्तु न: पिता॥**
**मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्य:। माध्वीर्गावो भवन्तु न:॥**

हम सत्य की खोज करने वालों के लिये-वायु मधुर बहे, नदियों से हमें मधुर जल प्राप्त हो, ओषधियाँ मधुरता से परिपूर्ण हों, रात-प्रात: और सन्ध्या मधुरता का संचार करें। धरती का प्रत्येक रज-कण मधुमय हो। आकाश जो पितास्वरूप है दूध की वर्षा करे। वृक्षों से मधुमय फल मिलें, सूर्य मधु का प्रसार करे और गाय हमें मधुमिश्रित दूध दे। यह है मधु के माहात्म्य का वर्णन ऋग्वेद में। जिस मधु के पान के लिये देवता भी लालायित हों उसके बारे में आज हम सब कुछ भूल बैठे हैं। यह हमारा दुर्भाग्य नहीं तो क्या है? केवल भारतीय संस्कृति में ही मधु की महानता का उल्लेख या वर्णन नहीं है अपितु इस अमृत तुल्य सुवासित महौषधि की प्रशस्ति में संसार के अन्यान्य अनेक धर्मग्रन्थों में उल्लेख मिलता है। बाइबिल और कुरान में इसका गुणगान किया गया है।

अथर्ववेद ९।२।२३ में कहा गया है : —

**मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद॥**

जो इस बात को जानता है, वह मधुर होता है, मधुवाला होता है और मीठे स्थान प्राप्त करता है॥

## जरा सोचें, समझें और करें

- इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जायें।
- इतने गरम मत बनो कि लोग तुम्हें छू भी न सकें।
- इतने सरल मत बनो कि लोग तुम्हें मूर्ख बना दें।
- इतने जटिल मत बनो कि लोग तुम्हें मिल न सकें।
- इतने गम्भीर मत बनो कि लोग तुमसे ऊब जायें।
- इतने छिछले मत बनो कि लोग तुम्हें माने ही नहीं।
- इतने महंगे मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सकें।
- इतने सस्ते भी मत बनो कि लोग तुम्हें नचाते रहें।
- आपके एक पल का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता है।
- आपके एक पल का सत्संग आपका भविष्य बना सकता है।
- सत्य बोलने का सबसे बड़ा फायदा उसे याद नहीं रखना पड़ता।

**संकलन : स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, भारत परिक्रमावासी**

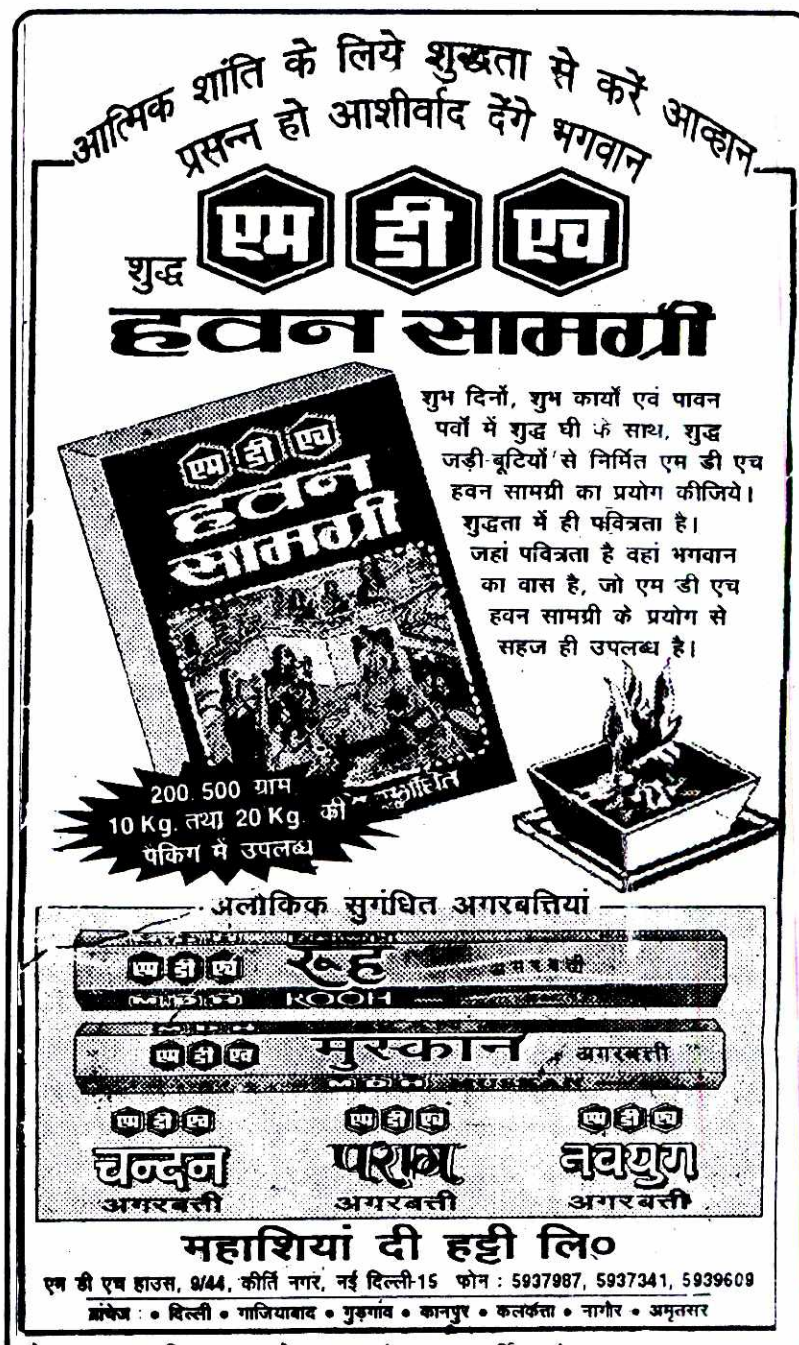


मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

# आर्य-संसार

## स्थापना दिवस एवं वेदारम्भ-संस्कार सम्पन्न

गढ़मुक्तेश्वर। 1 सितम्बर, रविवार-गंगा किनारे प्राचीन तीर्थस्थली-गुरु द्रोणाचार्य की तपस्या-स्थली गुरुकुल पूठ जिला हापुड़ का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सामवेद पारायण का भी आयोजन किया गया यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्यामलाल जी रहे। यजमान अशोक आर्य एवं नरेन्द्र आर्य स्याना रहे। नवीन छात्रों का वेदारम्भ-संस्कार किया गया। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती ने दीक्षा प्रदान की पूर्णाहुति पर मेरठ-गाजियाबाद-बुलन्द शहर-अमरोहा-स्याना-पिलखुवा-हापुड़-गढ़मुक्तेश्वर-मुरादाबाद के आर्यों ने भारी संख्या में भाग लिया। ग्रामीण क्षेत्रों से आर्यजनता श्रद्धा के साथ पधारी लोगों ने बुराइयां छोड़ने का संकल्प लिया। उपजिलाधिकारी गढ़ ने ध्वजा-रोहण कर कार्य का शुभारम्भ किया। भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय सचिव चौ० सत्यवीर सिंह आर्य ने अध्यक्षता की। ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य भजनोपदेशक के अतिरिक्त कवि वेकल जी, आचार्य ओमव्रत जी, आचार्य श्री श्यामलाल जी, चन्द्रकेतु आर्य महिपाल सिंह आर्य, आचार्य अरविन्द जी, आचार्य प्रमोद कुमार, कुलदीप शास्त्री, ऋषभ शास्त्री, श्रीराम ब्र०, नितिन ब्र० के वेदपाठ एवं भजनों के अतिरिक्त विचारों से जनता लाभान्वित हुई। डॉ. विकास आर्य की अध्यक्षता में हापुड़ आर्य उप-प्रतिनिधि सभा का गठन हुआ उनकी कार्यकारिणी का हार्दिक अभिनन्दन कुलभूमि की पवित्र यज्ञशाला में किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपप्रधान नरेन्द्र चौधरी भी उपस्थित रहे। सभा के महामन्त्री एवं गुरुकुल के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया। आचार्य राजीव प्राचार्य, आचार्य दिनेश अन्तरंग सदस्य उ०प्र० ने धन्यवाद दिया। वेदारम्भ संस्कारित छात्रों को जनता ने आशीर्वाद दिया।

## अनुकरणीय दान

सभा के ऋषिलंगर एवं भवन निर्माण हेतु निम्नलिखित महानुभावों ने सभा के भजनोपदेशक पं० रामकुमार आर्य द्वारा दान भेजा है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनका हार्दिक धन्यवाद करती है। दानी महानुभावों का विवरण इस प्रकार है—

(1) श्री सूरजभान चहल समता चौक बरौदा रोड गोहाना जिला सोनीपत 501 रु०, (2) मा० धर्मपाल आर्य सुपुत्र श्री अमरसिंह, ग्राम-कैथ, पो० शाहपुर, जिला पानीपत 1100 रु०, (3) श्री सतबीर जी आर्य सुपुत्र श्री होशियार सिंह, ग्राम-कैथ, पो० शाहपुर, जिला पानीपत 500 रु०, (4) आचार्य आत्मप्रकाश जी, श्रुतिधाम आश्रम भड़ताना, जिला जीन्द 1500 रु०, (5) रामगोपाल एडवोकेट चेयरी टेबल ट्रस्ट, पानीपत 200 रु०, (6) पं० रामकुमार आर्य भजनोपदेशक की माताजी श्रीमती नन्हीदेवी जी ने सभा के भवन निर्माण हेतु 5100 रु० का पवित्र दान दिया। सभा सभी दानी महानुभावों का धन्यवाद करती है। भविष्य में भी सात्त्विक दान देते रहें। सभा आपकी सदैव आभारी रहेगी।

श्रीमती नन्ही देवी धर्मपत्नी श्री बारूराम, बाघडू खुर्द (जीन्द)

—सभामन्त्री

## विज्ञापन के माध्यम से दी जाने वाली सहयोग राशि

### अन्दर के पृष्ठों के विज्ञापन रेट

एक पृष्ठ 5000/-, आधा पृष्ठ 2500/-, चौथाई पृष्ठ 1000/-, 1/8 पृष्ठ 500/- एवं 1/8 पृष्ठ से कम स्थान पर न्यूनतम एक बार का शुल्क 250/- रु०।

**नोट**—11 माह की सहयोग राशि प्राप्त होने पर धन्यवाद स्वरूप 12 माह के 48 अंकों में विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा। **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक प्रत्येक मास की 7,14,21, 28 तारीखों में प्रकाशित किया जाता है।

**व्यवस्थापक, 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक,**
**सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक**

## ये क्या बतायेंगे विद्यालयों में?

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

यदि रामपालदास या उनका कोई अनुयायी किसी विद्यालय में जाये तो वहाँ विद्यार्थियों को क्या बतायेंगे? उनके पास बताने के लिए ये बातें हैं—कबीर पूर्ण परमात्मा था, रामपालदास उसका अवतार है व पूर्ण परमात्मा है, ह्रीं श्रीं क्लीं कबीर सत् साहेब का जाप किया करो, रामपालदास द्वारा दिया नाम जपने से भूत-प्रेत, जिन्न, ओपरी हवा से दूर रहोगे, रामपालदास के गुरु की महिमा से भैंसे वेदमन्त्र बोलता है, मृतक जीवित हो जाता है, आदि। अब आप ही बताइए इन बातों का क्या व्यावहारिक उपयोग है सिवाय मस्तिष्क में तर्क व सृष्टि नियम विरुद्ध बात बिठाने के। सभी मत-पन्थों का यही हाल है।

धन्य ऋषि दयानन्द, जिन्होंने आर्यसमाज के रूप में सत्य व व्यावहारिक सिद्धान्त फैलाने वाली संस्था दी। आर्यसमाज के प्रचारक विद्यालयों में जाकर ब्रह्मचर्य, व्यवहार, पठन-पाठन के नियमों, राष्ट्रभक्ति, महापुरुषों के प्रेरक दृष्टान्तों, ध्यान, योग, आसन-व्यायाम आदि जीवन निर्माण के व्यावहारिक विषयों पर बोलते हैं व बोल सकते हैं। इस सबसे भी स्पष्ट है कि आर्यसमाज जिन सिद्धान्तों को मानता है, वही धर्म है, बाकी सब मतपंथ हैं। इन मत-पन्थों में कोई भी सर्वांश में व्यावहारिक नहीं है। रामपालदास का मत तो पूर्ण ही अव्यावहारिक है। जो अपना झूठ चलाना चाहता है वह पहले दूसरे के सत्य को दबाने का प्रयास करता है। रामपालदास ने यही किया। लेकिन यह भूल गया कि ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ का ऐसा प्रकाश किया है कि जिसे मिटाने का सामर्थ्य किसी में नहीं है।

आर्य विद्वानों को चाहिए कि विद्यालयों में जाएं तथा सत्य-सिद्धान्तों का प्रचार करें। आज भी अनेक गांव व शहर के भी मुझे अनेक सज्जन ऐसे मिलते हैं जो कहते हैं कि हमारे विद्यालय में आर्यविद्वान् आते थे, उनके विचार सुनकर ही हमें आर्यसमाज के बारे में पता चला। वर्तमान में श्री चन्द्रदेव जी प्रचारमंत्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल की विद्यालयों में प्रचार करने की योग्यता बहुत बढ़ी हुई है। सभी को प्रयास करना चाहिए।

## नेशनल में फारुल को गोल्ड व सिल्वर

योगा फेडरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा रांची (झारखण्ड) में आयोजित 38वीं राष्ट्रीय योगा चैम्पियनशिप (23-27 नवम्बर) में आर्य बाल भारती के योगा शिक्षक ब्रह्मचारी फारुल आर्य ने आर्टिस्टिक पेयर में हरियाणा पुलिस के एस.आई. वीरभान के साथ संयुक्त रूप में गोल्ड व एकल प्रतियोगिता में आयुवर्ग 17-21 में सिल्वर मैडल प्राप्त किया। फारुल का चयन 12 से 14 जुलाई को दक्षिण कोरिया में होने वाली एशियन योगा चैम्पियनशिप के लिए किया गया। शिक्षक की इस उपलब्धि पर पूरे विद्यालय में हर्ष का माहौल है। फारुल आर्य की मेहनत से आर्य बाल भारती विद्यालय, पानीपत के विद्यार्थियों ने भी राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त किए हैं।

शिक्षक की इस उपलब्धि पर विद्यालय कार्यकारिणी के प्रधान आजाद आर्य, प्रबन्धक रमेश मलिक, कैशियर श्री अजीत आर्य, प्राचार्या श्रीमती रेखा शर्मा, डी.पी. जगदीश चहल, आशा अरोड़ा, पी.टी.आई. संदीप आर्य आदि ने विशेष बधाई दी।

—अभय आर्य, निदेशक, आर्य बाल भारती विद्यालय, पानीपत

## गुरुकुल होशंगाबाद का 102वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) का 102वां वार्षिकोत्सव दिनांक 13, 14, 15 दिसम्बर 2013 को आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में देश के ख्यात नाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे। आप समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि उक्त कार्यक्रम में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें।

**—आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, संयोजक गुरुकुल महोत्सव, मो० 9424471288**

# सूर्य तथा मेघ प्रभु की अद्भुत विभूतियां हैं

❑ डॉ० अशोक आर्य

हम प्रतिदिन आकाश में चमकता हुआ सूर्य देखते हैं, यह सूर्य समस्त जगत् को प्रकाशित करता है। यहाँ तक कि हमारी आँख भी इस सूर्य के कारण ही देख पाने की शक्ति प्राप्त करती है। यदि सूर्य न हो तो हमारी आँख का कुछ भी उपयोग नहीं हो सकता। इस प्रकार ही आकाश में मेघ छा जाते हैं। इन मेघों से होने वाली वर्षा से हम आनन्दित होते हैं। हम केवल आनन्दित ही नहीं होते, अपितु हमारे उदर पूर्ति के लिए सब प्रकार की वनस्पतियां भी इन मेघों का ही परिणाम है। यदि यह बादल पृथ्वी पर वर्षा न करें तो कोई भी वनस्पति पैदा न होगी। जब कोई वनस्पति न होगी तो हम अपना उदरपूर्ति भी न कर सकेंगे। इस सब तथ्य को वेद का यह मन्त्र इस प्रकार बता रहा है—

**इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्य रोहयद दिवि।**
**वि गोभिरद्रिमैरयत॥** (ऋग्वेद 1.7.3)

इस मन्त्र में मुख्य रूप से तीन बातों पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि—

**(1) प्रभु ने हमारे देखने के लिए सूर्य को बनाया है**—प्रभु का उपासक यह जीव उस प्रभु के समीप बैठकर उस प्रभु के उपकारों को स्मरण कर रहा है। वह इन उपकारों को स्मरण करते हुए कहता है कि हमारे वह प्रभु सब प्रकार की आसुरी वृत्तियों वालों का संहार करने वाले हैं, उनका नाश करने वाले हैं, उन्हें समाप्त करने वाले हैं। हमारा वह प्रभु अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। फिर वह इन असुरों से भक्तों की रक्षा तो करेगा ही। इस कारण जब-जब भी इस भूमि पर आसुरी प्रवृत्तियां बढ़ती हैं तो वह पिता उन असुरों का नाश करने का साधन भी हमको देते हैं, जिसकी सहायता से हम उन असुरों का नाश करते हैं। यह सब उस पिता के सहयोग व मार्गदर्शन का ही परिणाम होता है।

इन असुरों का नाश हम आंख की सहायता से करते हैं। यह आंख ही है जो हमें दूर-दूर तक देखने में सक्षम करती है, दूर तक देखने की शक्ति देती है। यदि आंख न होती तो हमें इन असुरों की स्थिति का पता ही न चल पाता। जब उनकी स्थिति का पता ही न होगा तो हम उनका संहार, उनका अन्त कैसे कर सकेंगे? यह आंख भी अपना क्रिया कलाप सूर्य की सहायता के बिना नहीं कर सकती। जब तक यह जगत् प्रकाशित नहीं होता, तब तक इस आंख में देखने की शक्ति ही नहीं आ पाती। इस कारण परमपिता परमात्मा ने आंख बनाने से पहले इस संसार को सूर्य का उपहार भी दिया है। इसे द्युलोक में स्थापित किया है। यही कारण है कि द्युलोक की मुख्य देन यह सूर्य ही है। यह सूर्य समग्र संसार को प्रकाशित करता है। सूर्य के इस प्रकाश से ही हमारी आंख अपने सब व्यापार, सब क्रिया-कलाप करने में सक्षम हो पाती है। इस प्रकाश के बिना इस आंख का होना व न होना समान है। सूर्य ही इस आंख को देख पाने की शक्ति देता है, जिसका निर्माण भी इस सृष्टि ही के साथ उस पिता ने ही किया है।

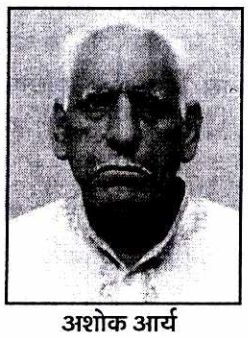
अशोक आर्य

**(2) प्रभु ने ही जल के साधन मेघों को बनाया है**—परमपिता ने हमारे देखने के लिए आंख का निर्माण तो कर दिया किन्तु हमारी नित्यप्रति की क्रियाओं की पूर्णता जल के बिना नहीं हो पाती। जल से ही सब प्रकार की वनस्पतियों का जन्म व विकास होता है, जल से ही यह वनस्पतियां बढ़ती, फलती, फूलती व पक कर हमारे लिए अन्न देने का कारण बनती हैं। इतना ही नहीं हमें अपना भोजन पकाने के लिए भी जल की ही आवश्यकता होती है। यदि जल न हो तो हम एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकते। इस कारण ही उस पिता ने जलापूर्ति के लिए मेघों को प्रेरित किया है। मेघों का निर्माण किया है।

यदि वह प्रभु मेघों की व्यवस्था न करता, वर्षा का साधन न बनाता तो निश्चय ही इस धरती का पूरे का पूरा जल बहकर समुद्र में जा मिलता। इस प्रकार यह जल मानव के लिए दुर्लभ हो जाता, अप्राप्य हो जाता। इससे मानव का जीवन ही असम्भव हो जाता। अत: यह मेघ ही हैं जो समुद्र आदि स्थानों का जल अपने में खींच लेते हैं। इसे उड़ाकर अपने साथ ले जाकर पर्वतों की ऊँचाई पर जाकर वर्षा देते हैं। जिससे नदियां लबालब भर जाती हैं। नदियों में प्रवाहित यह जल हमारी वनस्पतियों की सिंचाई से इनका रक्षक बनता है, हमारी सफाई करता है तथा हमारी प्यास को भी शान्त करने का कारण बनता है। इससे ही अन्न की उत्पत्ति होती है। इस कारण ही प्रभु की यह अद्भुत कृति मेघ भी मानव निर्माण में विशेष महत्त्व रखती है।

**3. हम मस्तिष्क में ज्ञान का सूर्य और हृदय में प्रेम के मेघ पैदा करें**—मानव को अध्यात्म क्षेत्र में पांव रखते हुए चाहिये कि वह अपने अन्दर ज्ञानरूपी सूर्य का उदय करे। हमारा वह पिता अनेक प्रकार की वस्तुओं को जन्म देकर आध्यात्मिक रूप से हमें उपदेश दे रहा है कि हे मानव! जिस प्रकार मैंने सूर्य आदि की उत्पत्ति करके तुझे प्रकाशित किया है, इस प्रकार ही तू भी अपने अन्दर ज्ञान का प्रकाश करके स्वयं को भी प्रकाशित कर तथा अन्यों को भी प्रकाशित कर। ज्ञान मानव जीवन का निर्माता है। अपने जीवन का निर्माण करने के लिए स्वयं को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करना आवश्यक होता है। जब स्वयं हम कुछ भी ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तो इस ज्ञान के प्रकाश से अन्यों को भी प्रकाशित करें यह ही प्रभु का आदेश है, सन्देश है, उपदेश है।

उस प्रभु ने हमें अपना सन्देश देते हुए, आदेश देते हुए आगे कहा है कि हे जीव! तुझे प्रेम की आवश्यकता है, स्नेह की आवश्यकता है, किन्तु इसे पाने के लिए तुझे अपने हृदय मन्दिर में प्रेम का दीप जलाना होगा, प्रेम के मेघ पैदा करने होंगे। जिस प्रकार मेघ सब ओर शान्ति का कारण होते हैं, उस प्रकार तेरे हृदयाकाश में पैदा हुए यह मेघ भी तुझे तथा तेरे साथियों, सम्बन्धियों, पड़ोसियों तथा क्षेत्रवासियों के अन्दर प्रेम का स्फुरण कर शान्ति का कारण बनेगा। इसलिए तूं सदा अपने हृदय में प्रेमरूपी मेघों को पैदा करने तथा उन्हें बंधाने का यत्न करता रह।

ईश्वर हमें उपदेश कर रहे हैं कि हे जीव! जिस प्रकार सूर्य की गर्मी से उड़कर यह पार्थिव जल अन्तरिक्ष में पहुंचा जाता है, पहाड़ों की चोटियों को छू लेता है तथा ऊपर जाकर मेघों का रूप धारण कर लेता है तथा वर्षा करके इस धरती को सब ओर से स्वच्छ कर देता है, सब प्रकार की धूलि को धो देता है, सब ओर सब कुछ स्वच्छ व साफ-सुथरा होने से सुन्दर व आकर्षक लगता है, उस प्रकार ही अध्यात्म में ज्ञान का सूर्य चमकने से पार्थिव वस्तुओं के प्रति हमारा प्रेम हृदयरूपी अन्तरिक्ष में जाकर सब प्राणियों पर फिर से बरस, सबको ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर उन्हें पवित्र करता है, शुद्ध करता है, स्वच्छ करता है तथा प्रसन्न करता है, सबके मनोमालिन्यों को धो डालता है।

संपर्क-104 शिप्रा अपार्टमेंट,
कौशाम्बी-201010, गाजियाबाद
फोन 09718528068

## क्या ईश्वर हमसे रूठ गये हैं ?.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

ही भोग कर। दूसरे को दियेगये धन पर लालच की दृष्टि से मत देख। यह धन किसी का नहीं है।

अब देखिये निम्नलिखित वेदमन्त्र में ईश्वर की क्या आज्ञा है?

**स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥** (अथर्ववेद)

इस मन्त्र के अन्तिम चरण में वेद भगवान कह रहे हैं कि यदि तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति करनी है तो मेरे द्वारा दिये सातों वरदान उपभोग करने के उपरान्त मुझे ही अर्पित कर दो। इन पर स्वामित्व की भावना मत रख। ये तो केवल तुम्हें तुम्हारा शरीररूपी रथ चलाने के लिए दिये गये हैं।

जैसे ही हम ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके प्रति समर्पित हो जायेंगे, हमारा रूठा हुआ सखा मान जायेगा। हमें सत्य मार्ग की ओर प्रेरित करेगा और अपने अन्त:करण में उसकी आवाज़ सुनाई देने लगेगी। हमारा जीवन धन्य-धन्य हो जायेगा।

संपर्क-प्रधान, आर्यसमाज मॉडल टाउन,
541-L, मॉडल टाउन, यमुनानगर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।